एक भूमि जिसे हम घर कहकर पुकारते थे।

(एक भूमि जिसे मै कभी घर पुकारता।)

समुद्र के उस पार में एक भूमि है
जो मेरा जन्म भूमि है।
प्रथम जिसे भगवान रचे
जब वे आदमी को पहली बार भेजे।

जहाँ राजा, रानी और राजकुमारों ने
पाचँ हज़ार साल तक शासन चलाये
प्यार और हँसी की भूमि में
खुशियाँ भनाये, आँसू बहायें।

यह भूमि महान् नदियों और
सुनहरें जगंल जो हरें हैं
ऊँचे पहाडों के भव्यता
मानव जो यही देखा हैं।

दार्जिलिंग के हरे पहाड़ो से
एवरेस्ट की चोटियों को देख पाते हैं
बर्फ से ढ़के शिखरों से घेरें
जहाँ बादल विश्राम करने आते हैं।
ताजमहल जो सुन्दर है, लाल किले जो समीप
यहीं पर इक राजा ने खों दिया अपना प्यार,
श्रीश्र चढ़ाकर विनती की, कि खुद भी मर जाँए।

भही वह भूमि, जिसे ससांर बुलाता भारत
समुद्र के उन फ़ेरों के पार
भूमि जिसे मैं प्यार करता
धरती जिसे मैं अपना घर मानता
(वह) घरती जिसे मैं अपना घर पुकारता।